अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

15.07.20

दरिद्रचारुदत्त (भास रचित)

चारुदत्त प्रकरण है या नाटिका

विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में रूपकों का 10 रूप बतलाते हुए प्रकरण का उल्लेख किया है।

नाटिका उपरूपक के 18 भेदों में परिगणित है। प्रकरण रूपकों के 18 भेदों में से एक है और नाटिका उपरूपकों के 18 में से एक।

नाटिका का लक्षण बतलाते हुए विश्वनाथ साहित्य दर्पण में लिखते हैं कि नाटिका का वृत्त कवि कल्पित होता है। स्त्री पात्राओं का अधिकाधिक चित्रण होता है। चार अङ्कों में यह समाप्त हो जाता है। प्रख्यात राजवंश के धीर ललित प्रकृति वाला राजा नायक होता है। नायिका के लिए नायक के अन्तःपुर से सम्बद्ध होना अथवा संगीत-कला में निपुण होना राजकुलोत्पन्न होना तथा नवानुरागवती कन्या होना अपेक्षित है। इसमें नायक राजा का नायिका के प्रति रतिभाव देवी (राजमहिषी) के भय से अनुविद्ध रूप से ही प्रकाशित किया जाता है। राजकुल में उत्पन्न प्रगल्भा प्रकृति वाली रानी जो पग-पग पर मान करती हुई चित्रित की जाती है, को ही यहाँ देवी कहा गया है। उसी की अनुकम्पा पर नायक-नायिका का मिलन संभव होता है। इसमें वृत्ति की

प्रधानता है और अंशमात्र विमर्श सन्धि के साथ सन्धि-चतुष्टय की रचना होती है।

वस्तुतः 'नाटिका' नामक उपरूपक 'नाटक' तथा 'प्रकरण' नामक रूपक के ही वैचित्र्य सम्मिश्रण से रचा जाया करता है। प्रकरण के समान इसका इतिवृत्त कल्पित होता है तथा नाटक के सदृश नायक को राजकुलोत्पन्न होना आवश्यक होता है।

प्रकरण का लक्षण बतलाते हुए विश्वनाथ साहित्य-दर्पण में लिखते हैं कि 'प्रकरण' वह रूपक है जिसमें शृंगार की की अभिव्यञ्जना अङ्गी रस के रूप में हुआ करती है जिसका नायक विप्र, अमात्य और वणिक् में से किसी भी श्रेणी का हो सकता है। नायक धीरप्रशान्त कोटि का होता है तथा विपरीत परिस्थिति में पड़े रहने पर भी धर्म, अर्थ, कामपरायण रूप में चित्रित होता है। इसकी नायिका कुलस्त्री तथा वेश्या दोनों ही कोटि की हो सकती है। उसमें धूर्त, द्यूतकार, विट और चेट आदि का भी पर्याप्त चित्रण हुआ करता है। प्रकरण के शेष लक्षण नाटक के होते हैं।

इन लक्षणों को देखने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि चारुदत्त नाटिका नहीं है। उसका नायक चारुदत्त नाटिका लक्षणानुसार राजकुलोत्पन्न नहीं है और न ही नायिका वसन्त-सेना। नायक की पत्नी भी राजवंशकुलोत्पन्न नहीं है और न ही स्त्री पात्राओं का अधिकाधिक चित्रण है।

किन्तु प्रकरण के लक्षण चारुदत्त पर सही प्रतीत होते हैं। चारुदत्त का वृत्त लौकिक तथा कविकल्पित है। अङ्गी रस शृंगार है। इसका नायक विप्र है जो धीर-प्रशान्त कोटि का है। विपरीत परिस्थितियों में रहने पर भी वह धर्मादि कर्म का त्याग नहीं करता है। लक्षणानुसार नायिका वेश्या है। इसके साथ ही द्यूतकार, शकार, विट, चेट इत्यादि का चित्रण हुआ है। नाटक के सदृश इसमें

सुख-दुःख दोनों की समुद्भूति होती है। तथा शृंगार, हास्य, करुण इत्यादि अनेक रसों का निरंतर समागम हुआ है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि महाकवि भास प्रणीत 'चारुदत्तम्' एक प्रकरण है न कि नाटिका।